Shodh Sanchay
Shree Naroda Kelavani Mandal Sanchalit
SMT. A.P. PATEL ARTS & LATE SHREE N.P. PATEL COMMERCE COLLEGE
Shree Prahladbhai Kashidas Patel Vidhya Sankul, Naroda, Ahmedabad-382330.
Reaccredited by NAAC with B Grade Third Cycle | Accredited - by 'AAA'= 4 Star
Phone : 079-22816582, M.: 8866388134 E-mail : narodacollage1993@yahoo.com

Volume - 1

आधुनिक हिन्दी रंगमंच और नाट्य शिल्प का विकास

डॉ.करसन एन रावत

एसो.प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, आर्टस एण्ड कॉमर्स कॉलेज,नरोडा अहमदाबाद,

Mo. No. 9979593686, Email- ravatkarsan66@gmail.com

Paper Abstract:

हिन्दी नाटक और रंगमंच के विकास की दृष्टि से आधुनिक युग हिन्दी नाटक की अब तक की विकास यात्रा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण काल है । इस युग में पूर्ववर्ती नाट्य धाराओं के विकास एवं परिपूर्णता के साथ ही कई नई प्रवृत्तियाओँ का उद्भव और विकास हुआ । नाटक सच्चे अर्थों में जीवन तथा जगत की यथार्थपरक कलात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बना । आधुनिकता से हमारा मतलब काल-विशेष के प्रति जागरण का भाव है । आधुनिक हिन्दी नाट्य क्षेत्र में सन् 1960 के बाद का समय अद्भूत परिवर्तन का रहा है । ऐसा कहा जाता है कि सन् 60 के बाद नाटक मौलिकता, जटिलता और सर्जनात्मकता का सबूत देने लगा था । आधुनिक हिन्दी नाटक के कथ्य की बात करे तो वर्तमान हिन्दी नाटकों में कथ्य में मुख्य पहलु हैं- पारिवारिक रिस्तों में कडवाहट, मम्बन्धों में बिखराव, मूल्य हिनता, समकालीन मानवीय स्थिति की विडम्बना, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक प्रश्न समकालीन हिन्दी नाटकों का विषय वस्तु बना है । आधुनिक हिन्दी नाटककारों ने पौराणिक आख्यानों में आधुनिक संम्भावनाओं की खोज की है ।

Paper Keywords:

आधुनिक -नये परिवेश पर लिखे गये हिन्दी नाटक ।

रंगमंच - ऐसे नाटक जो रंगमंच पर प्रस्तुत हुए हैं ।

सामाजिक - ऐसे नाटक जिसमें सामाजिक समस्या का चित्रण हो ।

शिल्प - नाटक की कथा और भाषा में जो परिवर्तन आता है वह नया शिल्प ।

संवाद - नाटक में पात्रों की अभिव्यक्ति का एक माध्यम ।

Shodh Sanchay
Shree Naroda Kelavani Mandal Sanchalit
SMT. A.P. PATEL ARTS & LATE SHREE N.P. PATEL COMMERCE COLLEGE
Shree Prahladbhai Kashidas Patel Vidhya Sankul, Naroda, Ahmedabad-382330.
Reaccredited by NAAC with B Grade Third Cycle | Accredited - by 'AAA'= 4 Star
Phone : 079-22816582, M.: 8866388134 E-mail : narodacollage1993@yahoo.com

Volume - 1

Paper Title: आधुनिक हिन्दी रंगमंच और नाट्य शिल्प का विकास

नाटक साहित्य की सर्वाधिक सशक्त प्रभावशाली विधा है। नाटक दृश्य काव्य है। श्रव्य एवं दृश्य काव्यों में नाटक श्रेष्ठ है। यह पंचमवेदन के नाम से जाना जाता है। रंगमंच इसका प्राणतत्व है। नाटक द्वारा पाठकों एवं दर्शकों को रसानुभूति होती है। रसानुभूति का अर्थ है अपना अस्तित्व भूलकर तन्मय हो जाना, आश्रय से सामाजिक अपना तादात्मय स्थापित कर लेता है। नाटक की उपादेयता इसी में है कि सामाजिक उसे देखकर अधिक से अधिक आनंद प्राप्त कर सके। नाटक लोकतांत्रिक कला है अतः इसका महत्व सभी कलाओं में अधिक है। यह जनता की धरोहर हैं, साथ ही उसके आनंद का आधार भी। आदिकाल से लेकर आजतक कई समीक्षकों ने नाट्य के वैशिष्ट्य को लेकर विचार किया है। नेमिचंद्र जैन ने 'रंगदर्शन' में नाटक को परिभाषित करने का प्रयास किया है। वे नाटक के बारे में लिखते है कि- "अपनी मूल प्रवृत्ति की दृष्टि से नाटक वह संवादमूलक कथा है जिसे अभिनेता रंगमंच पर नाट्य व्यापार के रूप में दर्शक वर्ग के सामने प्रस्तुत करता है।"[1] स्पष्ट है कि नाटक दृश्यकाव्य है काव्य का केवल श्रवण कर सकते हैं, परंतु नाट्य का श्रवण करने से तो आनंद मिलता ही है, उसे हम आँखों से देख भी सकते हैं। यही इसकी विशेषता है। दशरथ ओझा नाटक के महत्व को प्रतिपादित करते हुए लिखते है कि - "हमारे राष्ट्रीय जीवन में नाट्यकला का प्रमुख स्थान रहा है, स्पष्ट है कि भारतीय संस्कृति के एकीकरण का श्रेय भारतीय नाटक को ही प्राप्त है।"[2] नाटक के वैशिष्ट्य एवं महत्व पर विचार करते हुए डॉ. मदन मोहन शर्मा द्वारा उद्धृत कथन में डॉ. गिरिश रस्तोगी कहते है कि - " साहित्य की अन्य विधाओं के परिप्रेक्ष्य में जब हम नाट्य विधा के अधिक उत्कृष्ट या विशिष्ट होने का समर्थन करते हैं तो इसी आधार पर कि उसकी सम्प्रेषणीयता की पैठ मानवमन की गहराइयों तक अधिक है।"[3] नाटक हमारे जीवनानुभवों में प्रवेश करने का अधिकार मिलता है और इस प्रकार हमें लगता है कि हमारा अनुभव क्षेत्र विस्तृत हो रहा है। इससे हमें संतोष मिलता है।

नाटक की कुछ एसी विशेषताएँ हैं जो साहित्य की किसी भी अन्य विधा में उपलब्ध नहीं होती। दृश्यत्व ही नाटक का मूल वैशिष्ट्य है जो उसे अन्य साहित्य से सर्वथा विलक्ष बना देता है। चाक्षुष प्रत्यक्ष होने के कारण ही नाटक के सभी तत्व कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध आदि के तत्वों से अधिक महत्वपूर्ण तथा प्रभावशाली सिद्ध होते हैं। कथावस्तु का क्रमिक विकास जितनी स्पष्टता से नाटक में दिखाया जा सकता है वैसा अन्य साहित्य रुपों में नहीं।

इसका कारण है कि नाटकीय कथा को अनेक दृश्यों में विभाजित कर उपस्थित किया जाता है । पात्र सभी साहित्यिक विधाओं का एक अनिवार्य तत्व माना जाता है । नाटक में इसका सर्वाधिक महत्व है । क्योंकि नाटककार को सभी प्रकार भावों विचारों को पात्रों के माध्यम से ही उपस्थित करना पड़ता है । संवाद मूलतः नाटक का ही अपरिहार्य तत्व है । नाटक पूर्णतः संवादात्मक होता है । नाटक के लिए पात्रानुकूल भाषा-विधान परम अपेक्षित माना गया है । नाटक के पात्र विभिन्न प्रकार के होते हैं इसीलिए नाटकीय भाषा के प्रयोग में भी विविधता का होना जरुरी है । रंगमंच नाटक के कलात्मक वैशिष्ट्य का प्रमुख निर्धारित तत्व है । साहित्य के एक स्वतंत्र भेद दृश्यकाव्य के रुप में नाटक की प्रतिष्ठा का मूलाधार रंगमंच ही है । सामाजिकों को नाटकीय घटनाओं के सम्पर्क में लाने का काम रंगमंच द्वारा ही संभव हो पाता है । अतः रंगमंचीय होना नाटक का प्रधान लक्षण या विशेषता है । डॉ. रामकुमार वर्मा नाटक के महत्व पर विचार करते हुए लिखते हैं कि “नाटक साहित्य का सद्गुण रुप है । जिस प्रकार निराकार ब्रह्म अपने वैभव का अभिज्ञान अवतार के माध्यम से भक्त को कराता है उसी प्रकार साहित्य का सौन्दर्य रंगमंच पर अवतरित होकर नाटक के रुप में प्रकट होता है ।”[4]

हिन्दी में आज समकालीन नाटक एक महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहा है और वह है उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता । समकालीन हिन्दी नाटक सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति करते हैं, साथ ही रंगमंच पर प्रस्तुत भी होते हैं। नाटकों में सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि समस्याओं का चित्रण प्रमुखता से किया जाता है। जिसका समाज में सीधा प्रभाव पड़ता है, जनता से सीधे संपर्क में आने के कारण दर्शक उसे अपने साथ घटित होता महसूस करता है। सबसे प्रभावशाली विधा मुझे नाटक ही लगा जिसका सामाजिक चेतना पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हमारे समाज, संस्कृति एवं राजनीति ने नयी करवट ली और एक नये प्रकार की आर्थिक परिस्थिति हमारे राष्ट्रीय जीवन में स्फुरित हुई। राष्ट्रीय जीवन में उभर ने वाली इन नयी गतिविधियों, घटनाओं, परिवर्तनों तथा अनेक प्रकार के तनावों को पृष्ठभूमि में रखकर इस युग के नाटकों से सशक्त रुप में अभिव्यक्त किया है। सन् 1950 से लेकर आजतक प्रजातंत्रीय व्यवस्था के प्रति जन-मानस में उद्वेलित संवेदनाओं के साथ साहित्य भी अपने अन्तर्बाह्य रुप में परिवर्तन होता रहा है। हिन्दी नाटक ने भी इसी समय से अपने नये-बोध और रुप तलाशना आरंभ किया है। आज हिन्दी नाटक इस स्थिति को पा सका है कि वह अपने-आपको किसी भी अन्य भारतीय भाषा के नाटक साहित्य के समकक्ष पाने की क्षमता रखता है।

हिन्दी नाटक को यह व्यापक- परिदृश्य प्रदान करने में श्रेष्ठ युवा तथा नवोदित नाटककारों का योगदान रहा है। पिछले 50 वर्षों के भारत में प्रगति के नाम पर आर्थिक विषमतायें और बेरोजगारी बढ़ती गयी है। भारतीय अर्थतंत्र सुधरते रहा है, परंतु सामाजिक दुर्व्यवस्था और भ्रष्ट शासन तंत्र के परिणाम स्वरुप आम आदमी की आर्थिक स्थिति में आशातीत वृद्धि नहीं हुई है। परिणाम स्वरुप निराशा, असंतोष और आक्रोश की भावनाओं के जीवन को अनेक अन्तर्विरोध और समस्याओं से भर दिया है। देश के विकसित और समृद्ध रुप से विश्रृखलित और आर्थिक योजनाओं की असफलता से निर्मित रुप देश के बहु संख्यंक वर्ग को अधिक प्रभावित किया है। आज स्थिति यह है कि बीमा और बैंको के राष्ट्रीय करण से देश की जनता को आर्थिक दृष्टि से कोई राहत नहीं मिली है। जीवन उपयोगी वस्तुओं की कीमतें बढ़ी है और बढ़ रही है जिसके फल स्वरुप आन्दोलन होते हैं, हडताल और घेराव होते रहते हैं। हमारी सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन हुए हैं, उनके कारण शहरी और ग्रामीण दोनों ही समाजों में मध्यम वर्ग का प्रभुत्व बढ़ा है। एक नये पूँजीपति वर्ग से श्रमिक वर्ग का समुदाय ज्यादा बड़ा है, परंतु वही सबसे ज्यादा सन्त्रस्त है। मध्यमवर्ग का हर स्तर पर शोषण किया जाता है। हिन्दी नाटककार इस बात की पुष्टी 'योर्स फेथफूली' नाटक में मुद्राराक्षस करते है। नाटक में एक क्लर्क अपना जीवन यापन करने के लिए बड़ी मुश्किल से कार्यालय की जिन्दगी में अपने आपको ढाल पाता है। वह एक हाथ भी खो चुका है। कटा हुआ हाथ उस व्यक्ति की कुंठा और विरोध का प्रतीक है।

आज उत्साह के साथ हिन्दी में रंगमंचीय नाटक सामाजिक नाटक लिखे जा रहे है। छठ्ठे दशक से मंचीय नव जागरण की जिस लहर का उन्मेष हुआ वह आज तक प्रगति की ओर उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है । उसके कारण हिन्दी रंगमंच ने काफी प्रगति कर भारतीय रंगमंच पर अपना स्थान बरकरार रखा है । समकालीन हिन्दी नाट्य साहित्य में व्यंग्य का प्रयोग सफलता पूर्वक हुआ है । आम बोल-चाल की नाट्य-भाषा की नई तलाश भी साथ में जारी है । आज के नाटककार लोकनाट्य शैली के साथ एब्सर्डिटी के तत्वों का भी सम्मिश्रण कर रहे हैं । जिसके कारण हिन्दी नाटकों की रंग सम्भावनाएँ बढ़ी हैं । इस बात की पुष्टि करते हुए देवेन्द्र अंकुर कहते हैं कि- " रंगमंच ने हर बार ऐसी स्थितियों को डटकर सामना किया और पूरी तरह से भस्म होकर भी उसी अग्नि में से पुनः जीवित होकर निकला ।"[5]

हिन्दी का नाटककार परिवेश के बोध की संवेदना, बाहय और आन्तरिक विसंगतियों, अन्तर्विरोधों, कटुताओं, पारिवारिक विघटन, मूल्य संक्रमण, स्त्री-पुरुष सम्बन्धों, राजनीतिक और

आर्थिक असंगतियों, वर्ग-चेतना आदि को लेकर नये क्षितिज की खोज में संलग्न है । अन्त में यह कहना अनुचित नहीं होगा कि आज का नाटककार समकालीन परिवेश के प्रति सजग है ।

संर्दभ संकेतः

1. रंगदर्शन - नेमीचंद्र जैन पृ. 23
2. नाटकः उद्‌भव और विकास - डॉ. दशरथ ओझा, पृ. 36
3. हिन्दी नाटकः सिद्‌धांत और विवेचन - डॉ. गिरीश रस्तोगी, पृ. 17
4. साक्षात्कार, अंक-308, अगस्त-सितम्बर 2005, सं. देवेन्द्र दीपक, डॉ. रामकुमार वर्मा का नाट्‌य चिन्तन- भरत देशाई पृ. 141
5. हंस - नवम्बर, 2003, सं. राजेन्द्र यादव, नाटक और व्यवस्था का विरोध- देवेन्द्र राज अंकुर , पृ. 20